Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | मई 2023 (प्रथम)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में आयोजित मासिक वैदिक सत्संग दिनांक 07 मई 2023 को मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर सुदेश छिक्कारा कुलपति भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर (सोनीपत) का कार्यक्रम में पहुँचने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजश्री, उपमंत्री श्री अनुराग खटकड़, प्रोफेसर सरिता, श्रीमती कमला श्री सुभाष आर्य, आचार्य सन्तराम, बहन दया आर्या, श्री सत्यवान आर्य कार्यालयाधीक्षक एवं अन्य सदस्यों द्वारा शॉल एवं स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया।

Email : aryapsharyana@yahoo.in | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | Visit us : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में आयोजित मासिक वैदिक सत्संग दिनांक 07 मई 2023 को मुख्यवक्ता के रूप में पद्मश्री बहन सुकामा (विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की) का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजश्री, श्री सुभाष आर्य, दया आर्या एवं अन्य सदस्यों द्वारा स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में आयोजित मासिक वैदिक सत्संग दिनांक 07 मई 2023 को मुख्यवक्ता के रूप में पद्मश्री बहन सुकामा (विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की) का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजश्री, श्रीमती कुसुमलता धर्मपत्नी श्री सत्यवान आर्य कार्यालयाधीक्षक, डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार, बहन दया आर्या एवं अन्य सदस्यों द्वारा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 7

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मई, 2023 (प्रथम)

1 से 15 मई, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. पूर्वजों की याद 4
4. वर्तमान युग में त्रैतवाद का प्रतिपादन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया 5
5. संस्कृति नहीं विकृति है समलैंगिक विवाह 7
6. क्या महाभारत में मन्त्र हैं? 8
7. प्राकृतिक खेती के अग्रदूत राज्यपाल आचार्य देवव्रत 10
8. राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर 11
9. गज्जनसिंह गोविंदपुरा ने प्राकृतिक खेती अपनाकर खरबूजे में कमाया मोटा मुनाफा 12
10. समाचार-प्रभाग 13
11. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन—उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

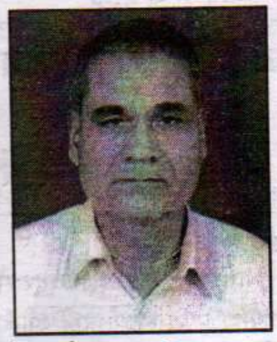

वेदमन्त्र

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद् रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद् गहनं गभीरम्॥
-ऋग्वेद 10.129.1

अन्वय-न असत् आसीत्। न सत् आसीत्। न तदानीम् रजः आसीत्। न यत् परः (परस्तात्) व्योम आसीत्। कुह शर्मन् कस्य किम् आवरीवः। गहनम् गभीरम् अम्भः किम् आसीत्।

अर्थ-(तदानीम्) जब सृष्टि उत्पन्न हुई उससे पूर्व (न असत् आसीत्) असत् नहीं था। (न सत् आसीत्) और न उस समय सत् ही था। (तदानीम् न आसीत् रजः[1]) उस समय लोकलोकान्तर भी न थे। (न व्योम) और नीला-नीला ऊपर दीखने वाला आसमान था। (कस्य) किस जीव के (शर्मन्=शर्मणि) भोग के विषय में (कुह) कहाँ (किम्) कौन चीज (आवरीवः) ढकने वाली थी? (गहनम् गभीरम् अंभः किम् आसीत्) घना स्पष्ट दिखाई न देने वाला 'अम्भः' अर्थात् तरल पदार्थ क्या था?

व्याख्या-जिस सूक्त का पहला मन्त्र हमने यहाँ दिया है, वह 'नासदीय' सूक्त कहलाता है। पुराने ऋषियों ने ऋग्वेदादि के सूक्तों के नाम उनके पहले शब्दों पर रख छोड़े हैं, जिससे विवेचना में सुगमता हो। जैसे 'हिरण्यगर्भ' सूक्त वह है जिसका पहला शब्द 'हिरण्यगर्भ' है। जिस सूक्त का पहला शब्द 'पुरुष' है उसको पुरुष सूक्त कहते हैं। इसी प्रकार इस सूक्त को 'नासदीय' सूक्त कहते हैं। यही सूक्त वैदिक दर्शन का मूल मन्त्र समझा जाता है। सभी अद्वैतवादियों ने अपने मत की पुष्टि में इसे प्रस्तुत किया है और स्वामी दयानन्द ने अपने दार्शनिक विचारों को प्रकट करते हुए इस मन्त्र पर टिप्पणी दी है। मैक्समूलर आदि पाश्चात्य संस्कृतज्ञों ने भी इस सूक्त की प्रशंसा की है। लोकमान्य तिलक ने 'गीता-रहस्य' में इसकी व्याख्या की है। आर्यसमाज के उपदेशकों के लिए यह महत्त्व की चीज है।[1]

हर एक विचारशील मनुष्य के मन में यह प्रश्न उठता है कि सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व क्या था? सृष्टि अजन्म या अनुत्पन्न तो है नहीं। हर चीज पैदा होती है। जन्म से पूर्व नहीं होती। फिर जन्म से पहले क्या था? क्या कुछ नहीं था? बिना कुछ हुए यह सब कुछ बन गया? ऐसी कल्पना के लिए कोई दृष्टान्त नहीं? घड़ा बनने से पहले कोई चीज न हो और घड़ा बन जाये, ऐसा तो सृष्टि में देखा नहीं जाता। घड़े से पूर्व मिट्टी चाहिये, कुम्हार चाहिये। कपड़े से पहले सूत चाहिये, जुलाहा चाहिये, घोंसले से पहले चिड़िया चाहिये, तिनके चाहियें। बादल से पहले भाप बनाने के लिए समुद्र का जल चाहिए और जल को गरम करने के लिए सूर्य की किरणें चाहिएँ। जब सृष्टि की हर चीज का नियम है कि जो बनी चीज है उसका कारण होता है, तो कैसे कहा जाए कि कुछ न हो फिर उससे कुछ हो जाए? इसलिए वेदमन्त्र ने स्पष्ट कहा है कि उस समय 'असत्' नहीं था अर्थात् हर चीज का अभाव न था। कार्य के उत्पन्न होने से पूर्व कार्य का ही अभाव होता है, कारण का नहीं। छान्दोग्योपनिषद् के समय में भी कुछ लोगों की यह भावना रही होगी कि सृष्टि शून्य से उत्पन्न हो गई अर्थात् बिना किसी कारण के।

तद्धैक आहुरसदेवेदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम् तस्मादसतः सज्जायत।

"कुछ लोगों का कहना है कि सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व 'असत्' (सत् का अभाव) था। 'अद्वितीयम्' अर्थात् अभाव के अतिरिक्त किसी वस्तु का भी भाव न था। इसलिए 'असत्' से ही सत् पैदा हुआ, ऐसा मानना चाहिए।" परन्तु उपनिषत्कार को यह बात मान्य नहीं। **क्रमशः...**

1. **'लोका रजांसि उच्यन्ते'**। निरुक्त 4.19
अत्र च सामान्यापेक्षमेकवचनम्। -सायणभाष्य
अनेक लोगों को जाति समझकर 'रज' शब्द एक वचन में आया है।

1. देखो हमारा 'अद्वैतवाद' अध्याय 11। वहाँ इस सूक्त के सातों मन्त्रों की व्याख्या है।

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 18. क्या ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् उसका आचरण आवश्यक है?

उत्तर-अच्छे पुरुषों के द्वारा उपदिष्ट ज्ञान भी तब व्यर्थ ही है जब तक कि उसके अनुकूल आचरण नहीं किया जावे।

भाव यह है कि मुझ विदुर से तुमने उपदिष्ट ज्ञान पहले तो ढंग से प्राप्त किया नहीं और यदि प्राप्त किया भी है तो उसे तुम आचरण में नहीं लाते। इसलिए तुम्हारे (धृतराष्ट्र) जैसे लोगों को ज्ञान देना व्यर्थ है।

प्रश्न 19. जो मनुष्य बार-बार पापकर्म को करता है, उसकी क्या गति होती है?

उत्तर-जो मनुष्य अपने पूर्व किये हुए दुष्कर्म पर विचार न करके उसे निरन्तर करता रहता है, वह मूढ़मति बड़ी भारी विपत्ति में फंस जाता है, वे दुर्बुद्धि लोग ऐसे नरक में गिरते हैं, जो भयंकर दुर्गन्धमय कीचड़ के समान होता है।

यहां भाव यह है कि धृतराष्ट्र ने पहिले यह भूल की है कि पहिले पाण्डवों का राज्य अपहरण कर लिया है, अब इस भूल को और आगे जारी रखा गया अर्थात् पाण्डवों का राज्य नहीं लौटाया तो आप लोग मूढ़मति कहलाओगे और घोर विपत्ति में फंस जाओगे।

प्रश्न 20. धन की रक्षा करने के लिए बुद्धिमानों को कौन-से छह द्वार बन्द करने चाहियें?

उत्तर-मन्त्र भेद के छह द्वार हैं। मन्त्र भेद का अर्थ है गुप्त निश्चयों को प्रकट करना। बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिए कि धन की रक्षा करने के लिए इन छह द्वारों को बन्द रखे -

(1) अहंकार अथवा मादक द्रव्यों से होने वाली चित्त की जड़ता।

(2) निद्रा अथवा असावधानता।

(3) शत्रु के गुप्तचरों का ज्ञान न होना।

(4) अपने में होने वाले मुखादि अंगों के हावभाव।

(5) दुष्ट मन्त्रियों पर विश्वास।

(6) मूर्ख दूतों पर विश्वास।

यहाँ महात्मा विदुर जी धृतराष्ट्र को कह रहे हैं कि हे राजन्! इन पूर्वोक्त छह द्वारों को जानकर जो मनुष्य इन्हें सदा बन्द रखता है, वह धर्म-अर्थ-काम के व्यवहार में संलग्न मनुष्य शत्रुओं को वश में कर लेता है।

प्रश्न 21. धर्म और अर्थ के ज्ञान के साधन कौन-कौन से हैं?

उत्तर-(1) शास्त्रों का अध्ययन।

(2) वृद्धों (ज्ञानवृद्ध, आयुवृद्ध) की सेवा-ये दोनों ऐसे साधन हैं जिनसे मनुष्य धर्म और अर्थ का ज्ञान प्राप्त कर सकता है अर्थात् शास्त्र वा हितैषी व्यक्तियों से सुने हुए उपदेश को न जानकर, अनुभवी वृद्धजनों की सेवा न करके कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति धर्म और अर्थ को जानने योग्य नहीं होते।

यहां भी यह वर्णन है कि गुरु बृहस्पति जो कि स्वयं बहुत बड़े ज्ञानी थे उनके भी शास्त्रों का अध्ययन करना होगा और वृद्धजनों की सेवा भी करनी होगी तभी बृहस्पति जी द्वारा कथित धर्म और अर्थ के सार को जान सकेंगे। यहां विदुर जी ने अपरोक्ष रूप से दुर्योधनादि के लिए संकेत किया है कि वे यदि धर्म और अर्थ का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना होगा जो कि वे नहीं कर रहे हैं। इसके साथ युधिष्ठिर (अग्रज भ्राता होने के नाते) तथा भीष्म पितामह और गुरु द्रोण जैसे आयुवृद्ध और ज्ञानवृद्ध जनों की सेवा करनी होगी।

प्रश्न 22. महात्मा विदुर के अनुसार कौन-कौन-सी वस्तु किस-किस के अभाव में नष्ट हो जाती है?

उत्तर-(1) समुद्र में गिरा हुआ पदार्थ नष्ट हो जाता है। समुद्र में अगाध जल होता है, उसकी तली भी गहरी होती है, उसमें असंख्य जीव-जन्तु भी होते हैं, वे उस वस्तु को निगल या खा सकते हैं। इस प्रकार यदि कोई वस्तु समुद्र में पड़ जाये तो वह वापिस मिलनी कठिन हो जाती है, अर्थात् नष्ट हो जाती है।

क्रमशः अगले अंक में...

पूर्वजों की याद

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

हमारे जीवन में कुछ की याद इतनी गहरी होती है कि जो भुलाये नहीं भूलती। रह-रहकर उनकी याद ताजा हो उठती है। इन्हीं में एक याद किसी पूर्वज की भी हो सकती है। पूर्वज शब्द का अर्थ है-पूर्व+ज-अर्थात् जो हमसे पहले (इस परिवार, क्षेत्र में) पैदा हुआ हो। जैसे कि हमारे परिवार में दादा-दादी, माता-पिता। यह एक प्रकृति का अनिवार्य नियम है कि आज पैदा होने वाला हर मनुष्य प्रकृति की प्रक्रिया के अनुसार अपने माता-पिता के द्वारा ही दुनिया में आता है। यह आना कोई सरल-सहज घटना नहीं है। हर बच्चे वाला एक लम्बा अनुभव रखता है कि किसी शिशु का बालक-किशोर-युवा (आदि रूप में विकसित) होना, एक लम्बी-चौड़ी संघर्षभरी मेहनत से होता है। प्रत्येक के पालन-शिक्षण-योग्यता प्राप्ति में पल-पल का योगदान होता है। इसीलिए मनुस्मृतिकार ने कहा है-बच्चों के पालन-पोषण-वर्धन के लिए माता-पिता जो परिश्रम-योगदान-संघर्ष करते हैं। उसका बदला सन्तान सैकड़ों सालों में भी नहीं कर सकती हैं। हाँ, हमारी परम्परा में पितृयज्ञ के द्वारा इसको समझाने और इस ऋण को कुछ हलका करने का एक सन्देश दिया है। पितृयज्ञ-पंचमहायज्ञों में से तीसरा है, इन पांचों को प्रतिदिन करने का विधान है।

हमारी सत्ता, हमारा होना, जीना पूर्वजों के परिश्रम का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हम अपने-अपने परिवार का हिस्सा हैं। परिवार समाज की ईकाई है अर्थात् परिवारों के मेल से ही समाज सामने आता है। अतः पूर्वज अपने परिवार की परम्परा को आगे बढ़ाकर समाज की ही सेवा करते हैं। उनकी यह समाजसेवा ही पूर्वजों के परिश्रम की पहचान है। आइए! इसी भावना को सामने रखकर संगठन सूक्त के इस मन्त्र पर कुछ विचार करें। इस मन्त्र का मूल सन्देश है-**'पूर्वजों की भांति तुम, अपने कर्त्तव्य के मानी बनो'** वह वेदमन्त्र है-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे सं जानाना उपासते॥

ऋ० 10.191.2

सामान्य शब्दार्थ-यथा=जैसे पूर्वे=हम से पूर्ववर्ती देवाः=समझदार, दिव्यपुरुष जानानाः=सचाई को समझते हुए भागम्=अपने हिस्से के कर्म को सम् उपासते=करते हैं, निभाते हैं। वैसे ही तुम भी संगच्छध्वम्=मिलकर चलो, जियो संवदध्वम्=सामाजिक भावना से बोलो। इसके लिए वः=तुम जानने वालों के मनांसि=मन संजानताम्=(भवतु) सहमत हों, तैयार हों।

प्रसंग प्राप्त शब्दार्थ-यथा=जैसे पूर्वे=हम से पहले वाले देवाः=सफल पूर्वज, महापुरुष जानानाः=अपने सामाजिक कर्त्तव्य कर्म को समझते हुए भागम्=अपने-अपने हिस्से के कार्य को कर्त्तव्य भावना से सम् उपासते=करते हैं। (तथा=उसी प्रकार यूयम्=तुम पीछे आने वाले भी) संगच्छध्वम्=सामाजिक भावना को ध्यान में रखकर सामाजिक व्यवहार को करो, सांझी चाल चलो। अर्थात् समाज की व्यवस्था को बनाये रखने वाला जीवन जिओ। संवदध्वम्=सामाजिक सामञ्जस्य के अनुकूल बोल बोलो। अर्थात् मेल-जोल को बढ़ाने वाले बोल बोलो। इसकी सिद्धि के लिए वः=तुम जानताम् मनांसि=मन सं (भवन्तु) सहमत हों अर्थात् एकदर्थ तुम सब अपने मनों को समझाओ, तैयार करो।

व्याख्या-तैत्तिरीय उपनिषद् का प्रथम भाग शिक्षावल्ली है। जिसमें पाठ्यक्रम, शिष्य-शिक्षक सम्बन्ध, लक्ष्य आदि की चर्चा है। इसके अन्तिम भाग में शिक्षा समाप्ति पर स्नातक को शिक्षा का सार, दीक्षान्त संस्कार के समान समझाया गया है। वहाँ (जीवन में लाए जाने वाले 'संगच्छध्वम्' मन्त्र से) 'सत्यं वद, धर्मं चर' जैसे प्रमुख सन्देश हैं। इसी के अन्तिम अंश में-एष आदेशः एष उपदेशः-कहा है। अर्थात् यही जीवन का निचोड़ है, अनिवार्य तत्त्व है। ठीक इसी उपनिषद् की तरह 10500 से भी अधिक मन्त्रों वाले ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त संगठन=अनुशासन है। जो चार मन्त्रों का ही है, वहाँ का यह दूसरा मन्त्र है सम्भवतः इसी सूक्त के सामाजिक सन्देश को सामने रखकर आर्यसमाज का दशम नियम सावधान कर रहा है-"सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र

शेष पृष्ठ 15 पर....

वर्तमान युग में त्रैतवाद का प्रतिपादन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया

सृष्टि उत्पत्ति में एकत्ववाद, द्वैतवाद या त्रैतवाद या बहुत्ववाद

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

आत्मा और ईश्वर के दो तत्त्वों के अतिरिक्त 'भौतिक द्रव्य' एक तीसरा तत्त्व है, इसलिए वैज्ञानिक दृष्टि से यह विचार करना आवश्यक है कि सृष्टि उत्पत्ति में मूल तत्त्व कितने हैं। मूलभूत तत्त्वों के विषय में वैज्ञानिक दृष्टि से मुख्य तौर पर निम्न विचार धाराओं पर विचार किया जाता है।

त्रैतवाद-त्रैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी।

त्रैतवाद का सिद्धान्त है कि किसी वस्तु के निर्माण में तीन प्रकार का कारणों का होना आावश्यक है। वे है उपादान कारण, निमित कारण तथा साधारण कारण। इन्हें क्रमशः समवायी कारण, निमित कारण तथा असमयावी (अकारिक कारण)। उदाहरणार्थ हम घड़े का दृष्टान्त लेते हैं। उपादान या समवायी कारण वह है जिसको बिना घड़ा न बन सके, जो स्वयं रूप बदलकर घड़ा बन जाए। इस परिभाषा से मिट्टी घड़े का उपादान कारण या समवायी कारण हुआ। निमित्त कारण वह है, जिसके बनाने से कुछ न बने, न बनाने से न बने, आप बने नहीं दूसरे को प्रकारान्तर से बना दे। इस परिभाषा में कुम्हार घड़े का निमित कारण हुआ। साधारण कारण वह है जो किसी वस्तु के बनाने में साधन हो या साधारण निमित हो। इस परिभाषा में कुम्हार का गोल चाक आदि घड़े के निर्माण में साधारण कारण हुआ।

त्रैतवाद का या बहुत्ववाद वह सिद्धान्त है जो कहता है मूलभूत सताएं तीन हैं। ये मूलभूत सताएं हैं-ईश्वर, जीव तथा प्रकृति। वेदों में इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन है। रामानुजाचार्य (जन्म 1017) मध्वाचार्य (जन्म 1119) भी ईश्वर तथा जीव की अलग अलग सताएं मानते थे। वर्तमान युग में त्रैतवाद का प्रतिपादन महर्षि दयानन्द (1824-1883) ने किया और अनेक पण्डितों का ने सांख्यदर्शन के सूत्रों का भाष्य त्रैतवाद ही किया है। तीन मूलभूत सत्ताओं ईश्वर, जीव, प्रकृति के सिद्धान्त को हमने त्रैतवाद या बहुत्ववाद की श्रेणी में रखा है।

सृष्टि का उपादन कारण प्रकृति है परमाणु है। यह उपादान कारण न हो तो सृष्टि बन नहीं सकती। सृष्टि का निमित्त कारण ब्रह्म या ईश्वर है। वैसे सृष्टि में प्रकृति ने नाना प्रकार ब्रह्मण्ड में सूर्य-चन्द्र-पृथ्वी-अप-तेज-वायु-आकाश आदि तथा पिंड में ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियां आदि साधारण कारण हैं। जैसे कुम्हार द्वारा निर्मित घड़े का उद्देश्य पानी भरना है, वैसे सृष्टि का उद्देश्य जीवात्मा को कर्मफल देना होता है। उसे विकास के मार्ग पर डाल देता है। प्रकृति परमेश्वर के साथ जीवत्मा न हो तो सृष्टि का संचालन खेल मात्र रह जाता है।

इन सब कारणों से सृष्टि की रचना में न एकत्ववाद से काम चलता है न द्वित्ववाद से काम चलता है। त्रैतत्वाद से ही इस समस्या का समाधान हो सकता है। उपनिषिदों गीता सांख्य में त्रैतवाद माना है।

वेदों में त्रैतवाद-

द्वा सुपर्णा सयुजा समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादु अति अनश्नन अन्यः अभि चाकशीति॥
(ऋ०)

बालात् एकम् अणीयस्कम् उत एकं नैव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया॥ (अथर्ववेद)

पिण्डरूपी वृक्ष तथा ब्रह्माण्डरूपी वृक्ष में वह जीवरूपी पक्षी पिण्ड में इन्द्रियों का तथा ब्रह्माण्ड में सांसारिक विषयों मीठा-मीठा लुभावना भोग ले रहा है, दूसरा परमेश्वर रूपी पक्षी जीवात्मा द्वारा किये गये रूपी कर्मों का फल देने के लिए उसकी गति विधि को देखता रहता है।

एकत्ववाद-एकत्ववाद का सिद्धान्त कहता है कि या तो जड़ से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है या चेतन से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। अगर जड़ से सृष्टि का निर्माण माने तो मानना पड़ता है कि भौतिक द्रव्य (प्रकृति) से ही जीवन की उत्पत्ति हुई है। ये लोग जड़ से जीवन की उत्पत्ति मानते हैं, किन्तु आत्मा-परमात्मा जैसे तत्त्व नहीं मानते। यह धारणा प्राचीन युग के चार्वाकों ने की है, वर्तमान युग के जड़वादियों भौतिकवादियों की है। अगर चेतन से सृष्टि का निर्माण माने

तो मानना पड़ता है कि चेतन तत्त्व से ही भौतिक द्रव्य (प्रकृति) की उत्पत्ति हुई है। ये लोग भौतिक द्रव्य तथा जीवात्मा की पृथक्, स्वतन्त्र, अनादि सत्ता नहीं मानते। धारणा भारतीय दार्शनिकों में मुख्य तौर पर शंकराचार्य (788-820) के वेदान्त सिद्धान्त के पाश्चात्य दार्शनिकों में मुख्य तौर स्पाइनोजा (1632-1677) तथा बर्कले (1685-1735) की और मतवादियों में यहूदी, ईसाई व मुसलमानों की है। यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान मानते है कि ईश्वर एक है, उसी ने अभाव से नेस्ति से जगत् तथा जीव को उत्पन्न कर दिया। भारत में इस मत के प्रवर्तक आचार्य बृहस्पति माने जाते है। चार्वाक् का अर्थ है, 'चारु वाक्' मीठी वाणी बोलने वाला। उनका कहना है कि न कोई ईश्वर है न जीव है, यह देह ही सब कुछ है। देह नष्ट हुआ सब कुछ समाप्त हो गया। मानव देह पृथ्वी, अप, तेज, वायु तत्वों से देह तथा संसार बना है।

प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब ये चार तत्त्वों से जड़ परमाणुओं के मिश्रण से बने है, तब इन जड़ तत्त्वों के मिश्रण से चेतन तत्त्व जीव कैसे उत्पन्न हुआ।

चार्वाक् का उत्तर–जिस प्रकार दही और गोबर मिला देने से कीड़े उत्पन्न हो जाते है, इसी प्रकार भिन्न-भिन्न परमाणुओं के एक विशेष प्रकार विशेष मात्रा से मिलने से आत्मा उत्पन्न हो जाता है। वर्तमान विज्ञान का उदाहरण लिया जाए तो जैसे हाइड्रोजन तथा आक्सीजन दोनों अदृश्य तत्त्व हैं। इन दोनों के एक विशेष मात्रा में सम्मिश्रण से जल नामक तत्त्व उत्पन्न हो जाता है, जो इन दोनों से भिन्न है, वैसे ही भिन्न-भिन्न जड़ परमाणुओं के मिश्रण से उनसे भिन्न-भिन्न तत्त्व उत्पन्न हो जाता है। उत्तर है कि दही और गोबर को तथा हाईड्रोजन तथा ऑक्सीजन को तो मिलाने वाली दूसरी चेतन हस्ती होती है। कलेवर बढ़ने के कारण एकत्ववाद को यहीं विराम देते हैं।

द्वैतवाद-द्वैतवाद का सिद्धान्त यह है कि मूलभूत सताऐं दो है- जीव तथा प्रकृति। यह धारणा सांख्यदर्शन की कही जाती है। सांख्यदर्शन के रचयिता महर्षि कपिल थे। सांख्यदर्शन को निरीखर सांख्य कहा जाता है। ऋषि दयानन्द जी ने सांख्य को ईश्वरवादी ही माना है। सांख्य का मुख्य विषय प्रकृति तथा पुरुष जड़ तथा चेतन इन दो तत्त्वों पर विचार करना है। भारतीय दर्शनशास्त्र में एकत्ववाद के विरुद्ध सबसे पहले प्रबल आवाज सांख्यकार महर्षि कपिल ने उठाई। उनका कहना है कि सृष्टि में अन्तिम सत्ता में एक तत्त्व मानने से काम नहीं चल सकता। जड़ तथा चेतन दो सत्ताओं को तो मानना ही पड़ेगा तभी सृष्टि उत्पत्ति की समस्या का सामाधान हो सकता है। इस विचार को सांख्यदर्शन का प्रकृति पुरुष का सिद्धान्त कहा जाता है। वैदिक संस्कृति क भोक्ता-भोग्य, दृष्टा, दृश्य आदि सिद्धान्तों का प्रारम्भ इसी द्वैतवाद के सिद्धान्त से हुआ है। द्वैतवाद के आचार्यों का मत है एक सत्ता जड़ है दूसरी चेतन। उनका कहना है कि सृष्टि की समस्या को समझने के लिए इन दो को तो मानना ही पड़ेगा। चेतन भी एक की जगह दो है एक आत्मा दूसरा परमात्मा।

सांख्यमतानुसार जब सरकार्यवाद सिद्ध हो जाता है तब यह मत अपने आप ही गिर जाता है, कि दृश्य सृष्टि की उत्पत्ति शून्य से हुई है अर्थात् जो कुछ है नहीं उससे जो अस्तित्व है वह उत्पन्न नहीं हो सकता। इस बात से साफ सिद्ध होता है कि सृष्टि किसी न किसी पदार्थ से उत्पन्न हुई है और इस समय सृष्टि में जो गुण हमें दीख पड़ते हैं वे ही इस मूल पदार्थ में होने चाहिएं। अब यदि हम सृष्टि की ओर देखें तो हम वृक्ष-पशु-मनुष्य, पत्थर-सोना-चांदी, हीरा, जल-वायु अनेक पदार्थ दीख पड़ते हैं, इन सबके रूप तथा गुण भिन्न-भिन्न है। सांख्यवादियों का सिद्धान्त है कि यह भिन्नता तथा नानात्व आदि में अर्थात् मूल पदार्थ में तो नहीं दीखता किन्तु मूल में सबका द्रव्य एक ही है। अर्वाचीन रसायन शाख्याओं ने भी भिन्न-भिन्न द्रव्यों का पृथक्करण करके पहले 62 मूल तत्त्व फिर 92 और अब 105 ढूंढ निकाले थे। अब पश्चिमी विज्ञान वेत्ताओं ने भी यह निश्चय कर लिया है कि ये मूलतत्त्व स्वतन्त्र्य वा स्वयं सिद्ध नहीं है। इन सबकी जड़ में कोई न कोई एक ही पदार्थ है, उस पदार्थ में जो मूल पृथ्वी तारागण की सृष्टि उत्पन्न हुई है। जगत् के सब पदार्थों में जो मूल द्रव्य है उसे ही सांख्यदर्शन में प्रकृति कहते हैं। सांख्यवादियों ने सब पदार्थों का निरीक्षण करके पदार्थों में तीन गुणों को पाया है सत्त्व, रज तथा तम इसलिए मूल द्रव्य में प्रकृति में भी इन तीन गुणों को मानते हैं। जिसके कारण प्रकृति में नानात्व पाया जाता है, एक प्रकृति से इन तीन गुणों के कारण अनेक पदार्थ उत्पन्न हो जाते हैं। सांख्य का कथन है कि सांसारिक जड़ पदार्थों की मूल सत्ता प्रकृति है। जिस प्रकार सांख्य जड़ प्रकृति की मूल सत्ता मानता है उसी प्रकार चेतन को भी मूल सत्ता मानता है। इसी चेतन को पुरुष, क्षेत्रज्ञ तथा अक्षर कहा गया है।

क्रमशः पृष्ठ 15 पर......

संस्कृति नहीं विकृति है समलैंगिक विवाह

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने हेतु बल दिया जा रहा है। समाचार-पत्रों में ऐसे समाचार पढ़कर आश्चर्य होता है कि ऐसी इन कृत्यों की भारत जैसे देश में क्या आवश्यकता पड़ गई। गाँव और नगरों में जहां हम भी रहते हैं, समलैंगिक विवाह जैसे सम्बन्धों को कभी नहीं देखा ना ही सुना, यही नहीं ऐसा ही लिव इन रिलेशनशिप इन्हें भारतीय समाज में बलपूर्वक मनवाने व इनका प्रचार-प्रसार करने का प्रयत्न किया जा रहा है। समलैंगिक विवाह व लिव इन रिलेशनशिप जैसे असांस्कृतिक, असामाजिक, अमानवीय कृत्यों को मान्यता तो दूर इनका नाम भी नहीं लेना चाहिए। यह हमारी भारतीय वैदिक संस्कृति के कभी अंग नहीं रहे ना ही शास्त्रोक्त हैं।

भारत देश विश्व में ब्रह्मचर्यप्रधान देश रहा है। यहाँ वेदानुसार चार आश्रम व चार वर्ण तथा सोलह संस्कारों का महत्त्व रहा है। पुत्र-पुत्रियों का विवाह भी दूर देश से किया जाता है, जहाँ उनके भाई-बहन का सम्बन्ध दूर-दूर तक भी न हो। हमारे यहाँ माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-ताऊ, दादा-दादी आदि सम्बन्ध अत्यन्त वैधानिक, मर्यादा व धर्मानुसार होते आए हैं, पर-स्त्री को माता-बहन तथा पुत्री की दृष्टि से देखा जाता है।

कामुकता, बलात्कार, तलाक जैसे शब्दों का हमारी संस्कृति में न तो स्थान था न मान्यता थी। विदेशी आक्रमण हुए मुगल, तुर्क, पठान, डच, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, अंग्रेज, ईसाई आदि बाहर से आए इन आक्रमणकारी लुटेरों ने यहाँ वहाँ खेला कर शारीरिक व सामाजिक रोग तथा विकृतियों को फैलाया।

कोरोना एड्स सिफलिश प्लेग स्वाइन फ्लू जैसे अनेक विदेशों से भारत आए। इसी प्रकार सामाजिक रोग अर्धनग्नता, अंग्रेजी कान्वैंट शिक्षा पद्धति, टाई-पैण्ट, पतलून का अब जीन्स व फटी पैण्ट का प्रचलन, बर्थडे पार्टी, पर्दाप्रथा, तलाक, लिव इन रिलेशनशिप और अब समलैंगिक विवाह। इन सब का भारत में कोई औचित्य नहीं और न ही आवश्यकता, परन्तु इन्हें हमारे समाज में बड़ी चालाकी से थोंपने का प्रयास किया जा रहा है। यह बाहर से आने वाले सामाजिक रोग हैं। हमारा राष्ट्र सदियों से वैदिकधर्मी रहा। राम-कृष्ण, विक्रमादित्य, राजा भोज, चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे यहाँ चक्रवर्ती राजा हुए। सदैव से वैदिक धर्मानुसार विवाह व संस्कारों की प्रथा रही है। वैसे भी यह कृत्य सृष्टि के नियम के विरुद्ध है। विवाह आठ प्रकार के बताए हैं-

1. **ब्राह्म विवाह**-वर व कन्या दोनों यथावत् ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्वान्, धार्मिक और सुशील हों, उनका प्रसन्नता से विवाह हो, वह बाह्म विवाह कहलाता है।

2. **दैव विवाह**-विस्तृत यज्ञ करने में ऋत्विक् कर्म करते हुए जामाता को अलंकार युक्त कन्या का देना दैव विवाह कहलाता है।

3. **आर्ष विवाह**-वर से कुछ लेके विवाह होना आर्ष विवाह होता है।

4. **प्राजापत्य विवाह**-धर्म की वृद्धि हेतु जो विवाह हो वह प्राजापत्य विवाह कहलाता है।

5. **आसुर विवाह**-वर व कन्या को कुछ देके जो विवाह हो, वह आसुर विवाह कहलाता है।

6. **गान्धर्व विवाह**-ऐसा विवाह जिसका कोई न समय हो न ही नियम हो, वर कन्या का किसी कारण से इच्छापूर्वक परस्पर संयोग हो, वह गान्धर्व विवाह कहलाता है।

7. **राक्षस विवाह**-बलात्कार से, लड़ाई से, छीन-झपटकर लड़ाई करके कन्या का ग्रहण करना राक्षस विवाह कहलाता है।

8. **पैशाच विवाह**-शयन किए हुए मद्य पीए हुए पागल कन्या से बलात्कार संयोग पैशाच विवाह कहलाता है।

आठ प्रकार के विवाह बताए गए हैं, इनमें सभी विवाह

शेष पृष्ठ 16 पर....

क्या महाभारत में मन्त्र हैं?

□ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

गतांक से आगे....

महाभारत युद्ध के विनाश का आधार पुरुष था कर्ण। जिसके बल पर दुर्योधन किसी छोटे-बड़े को कुछ नहीं समझता था। कर्ण को निर्दोष व उपेक्षित महापुरुष सिद्ध करते हुए महाकवि दिनकर ने 'रश्मिरथी' जैसा काव्य लिखा। उसके जन्म का प्रकरण इतना विचित्र है कि महाभारत को इतिहास की मुख्यधारा में लाने वाले लेखकों की दृष्टि में कुन्ती दुराचारिणी सिद्ध होती है। हम मानते हैं कि महाभारत काल आर्यों के पतन का काल था, पर यह भी संभव नहीं है कि पृथ्वी से लगभग पन्द्रह करोड़ किलोमीटर दूर स्थित व पृथ्वी से लाखों गुणा बड़ा सूर्य देवता कुन्ती के मन्त्र जाप से पृथ्वी पर आया और उसने कुन्ती को वरदान के रूप में पुत्र प्रदान करने का हठ करते हुए कहा-

वेदाहं सर्वमेवैतद् यद् दुर्वासा वरं ददौ।
संत्यज्य भयमेवेह क्रियतां संगमो मम॥
अमोघं दर्शनं मह्यमाहूतश्चास्मि ते शुभे।
वृथाह्वानेऽपि ते भीरु दोषः स्यान्नात्र संशयः॥

(महा० आदिपर्व, अ० 110, श्लोक 13-14)

शुभे! मैं यह सब जानता हूँ कि दुर्वासा ने तुझे वर दिया है। तुम भय छोड़कर मेरे साथ समागम करो। मेरा दर्शन अमोघ है और तुमने मेरा आह्वान किया है। भीरु! यदि यह आह्वान व्यर्थ हुआ, तो भी निःसन्देह तुम्हें बड़ा दोष लगेगा।

सामान्य व्यक्ति से भी गिरे हुए तो पुराणों के ऋषि थे, जो किसी से नाराज हुए तो शाप दे देते और प्रसन्न हुए तो वरदान। फिर देवता भी इतने मनचले कि किसी कन्या की चंचलता (या जिज्ञासा) का गलत लाभ उठाकर उससे सम्भोग कर बैठे। इस कुकर्म को वरदान कहें या मुसीबत। जिसे कुंवारी कुन्ती किसी को बता न सकी, किसी को दिखा न सकी। पुत्र त्याग का पाप भी करना पड़ा। आँखों के सामने रहते हुए भी जिसे जीवनभर अपना पुत्र कहकर स्नेह न कर सकी। ऐसी बला को कोई वरदान कहे तो वह उस देवता (सूर्य) से बढ़कर मूर्ख है। क्या सूर्य को पता नहीं था कि कुन्ती अभी कन्या है और कन्या को पुत्र प्रदान (गर्भ-स्थापन) करने से परिवार व समाज में उसकी क्या दुर्दशा होगी? वैसे भी कर्ण कुन्ती के लिए कहाँ काम आया? उल्टा दुर्योधन के साथ लग कर उसके पुत्रों को कष्ट ही देता रहा। महाभारत जैसा भयानक विनाश उसी के बल पर रचा गया।

गर्भस्थापन होते ही कवच कुण्डल युक्त पुत्र का जन्म होना, पेटी उपस्थित होना और उसमें रखे नवजात शिशु का नदी की लहरों में सुरक्षित रहना आदि असम्भव है। सूर्य के वरदान की कहानी गढ़ने वालों ने माँ कुन्ती के मुख से दूसरों (युधिष्ठिर आदि) के सामने केवल एक बार कर्ण को अपना पुत्र कहलवाया है और वह भी उसकी मृत्यु के बाद जलांजलि देते समय। उस समय कर्ण को अपना बेटा बताने का माँ कुन्ती को कोई लाभ नहीं था, क्योंकि माँ कुन्ती को पता था कि स्वयं को भाई का हत्यारा जानकर युधिष्ठिर को कितना दुःख होगा और जिस पाप को माँ ने जीवन भर छुपाया हो, उसे अब प्रकट कर बेटों में व समाज में कलंकित होने से कोई लाभ भी तो नहीं था।

यहां एक बात यह विचारणीय है कि जब माँ कुन्ती ने यह बात किसी को नहीं बताई थी, तो श्रीकृष्ण को कैसे पता चली और जब कृष्ण ने कर्ण को कुन्ती-पुत्र कहा, तो कर्ण ने भी आश्चर्य प्रकट नहीं किया, अपितु कहा कि मुझे सब पता है। तो कर्ण को इन बातों का कैसे पता चला? यदि कर्ण को पहले पता था तो उसने यह रहस्य रंगभूमि में अथवा बाद में भीम-अर्जुन द्वारा अपमानित किये जाने पर उद्घाटित क्यों नहीं किया? और जब कुन्ती कर्ण से मिलने गई और उसे अपना पुत्र कहा, तो कर्ण ने क्यों नहीं कहा कि मुझे सब पता है या कृष्ण ने मुझे बता दिया है? वहाँ कुन्ती को यह कहने की आवश्यकता क्यों पड़ी कि बेटा! अपने भाइयों को न पहचानने के कारण तुम जो मोहवश धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ रहते हो, यह तुम्हारे योग्य नहीं है। उसी समय कुन्ती की बात पर मोहर लगाने के लिए

सूर्यमण्डल से आकाशवाणी क्यों करवाई गई? पितामह भीष्म भी इस रहस्य को जानते थे और उन्होंने शर-शय्या पर पड़े हुए ही कर्ण को बताया था कि उन्हें यह रहस्य नारद और वेदव्यास जी से ज्ञात हुआ था। जब इतने लोगों को पता था कि कर्ण कुन्ती-पुत्र है, तो उन्होंने यह रहस्य प्रकट कर महाभारत जैसा विनाशकारी युद्ध क्यों नहीं रोका?

वास्तविकता तो यही लगती है कि बहुत कुछ मिलावट और हटावट में कर्ण के वास्तविक माता-पिता का नाम महाभारत से गायब हो गया, पर यह सत्य है कि कर्ण को कुन्ती-पुत्र सबसे पहले श्रीकृष्ण ने कहा था और वह भी जब शान्ति के लिए सभी मार्ग बन्द हो गये थे। युद्ध के विनाश को टालने के लिए नीतिनिपुण, बुद्धिमान् व मानव हितैषी कृष्ण को यही अन्तिम उपाय लगा कि कर्ण को पाण्डवों का बड़ा भाई बताकर उसे दुर्योधन से अलग किया जाए। यह उनकी भेदनीति थी, जिसका वर्णन उन्होंने हस्तिनापुर से असफल लौटकर पाण्डवों की सभा में किया- सभी भाइयों में प्रेम बना रहे-इस दृष्टि से पहले तो मैंने साम का ही प्रयोग किया था, किन्तु जब वे सामनीति से नहीं माने तो भेद का भी प्रयोग किया-

यदा नाद्रियते वाक्यं सामपूर्वं सुयोधनः।
तदा मया समानीय भेदिताः सर्वपार्थिवाः॥

(उद्योग० 150-10)

और उस भेद का संकेत उद्योग पर्व में मिलता है, जब कर्ण ने कृष्ण की बात न मानकर दुर्योधन के प्रति मित्रता के आदर्श की बात कही थी, तो उस समय कृष्ण ने हँसते हुए कहा था-

अपि त्वां न लभेत् कर्ण राज्यलम्भोपपादनम्।
मया दत्तां हि पृथिवीं न प्रशासितुमिच्छसि॥

(उद्योग० 42-2)

''कर्ण! मैं जो राज्य प्राप्ति का उपाय बता रहा हूँ, जान पड़ता है वह तुम्हें ग्राह्य नहीं प्रतीत होता है। तुम मेरी दी हुई पृथ्वी का शासन नहीं करना चाहते।''

पाठक समझ गये होंगे कि कर्ण को कुन्ती-पुत्र बतानेके पीछे कर्ण को दुर्योधन से अलग करना ही उद्देश्य था और उसकी राज्यलिप्सा को शान्त करने के लिए ही उसे पाण्डवों का राज्य सौंपने व युधिष्ठिर को युवराज बनाने की बात कही थी, अन्यथा युवराज तो पुत्र ही होता है, भाई नहीं।

कुन्ती ने कर्ण को पहली बार अपना पुत्र तब कहा, जब युद्ध निश्चित हो गया और कृष्ण कर्ण को कुन्ती-पुत्र बताकर भी दुर्योधन से तोड़ने में असमर्थ हो गये। ऐसे समय में और वह भी एकान्त में कर्ण को अपना पुत्र बताकर उसे पाण्डवों से मिलने के लिए कहना कुन्ती के स्वार्थ को दर्शा रहा है अर्थात् वह सीधे-सीधे राजनीति थी। माँ कुन्ती पहले तो कर्ण-अर्जुन की बलराम-कृष्ण जैसी जोड़ी बनाने के लिए कहती है। बाद में (कर्ण के न मानने पर) अर्जुन को छोड़कर शेष चारों भाइयों की जीवन रक्षा (अभयदान) का वचन लेकर अर्जुन या कर्ण में से एक (कोई भी जीवित रहे) पर सन्तुष्ट होकर चली जाती है और जाते समय कहती है-

त्वया चतुर्णां भ्रातृणामभयं शत्रुकर्शन्।
दत्तं तत् प्रतिजानीहि संगरप्रतिमोचनम्॥

(उद्योग० 146-26)

''शत्रुसूदन! तुमने अपने चार भाइयों को अभयदान दिया है। युद्ध में उन्हें छोड़ देने की प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना।'' कर्ण के 'तथास्तु' कहने पर कुन्ती वापस लौट गई। वह आई भी तो इसीलिए थी। चार भाई बचा लिये, अर्जुन के पराक्रम पर उसे विश्वास था और कर्ण की उसे चिन्ता नहीं थी, क्योंकि वह उसका बेटा था ही नहीं। कृष्ण, कुन्ती व भीष्म द्वारा उसे कुन्ती-पुत्र (युद्ध के समय) बताकर उसे पाण्डवों के पक्ष में करना था, क्योंकि तीनों ने उसे यह बात एकान्त में ही कही थी, सार्वजनिक नहीं। अतः कर्ण को कुन्ती-पुत्र व सूर्य-पुत्र बताना प्रक्षिप्त है।

अब हम कर्ण से सम्बन्धित कुछ और प्रसंगों पर विचार करते हैं-आदिपर्व अध्याय 131 श्लोक 11वाँ के अनुसार राधानन्दन सूतपुत्र कर्ण भी वृष्णिवंशी, अन्धकवंशी, कौरव तथा पांडवों के साथ आचार्य द्रोण के पास शिक्षा ग्रहण करता था। उसी समय से वह दुर्योधन का सहारा लेकर पाण्डवों का अपमान किया करता था और अर्जुन से लाग-डांट रखता था- शेष पृष्ठ 16 पर....

प्राकृतिक खेती के अग्रदूत राज्यपाल आचार्य देवव्रत

प्राकृतिक खेती के माध्यम से ही किसान बन सकता है अपना भाग्य विधाता

अस्पतालों में लगती लंबी लाइनें, प्रतिदिन नए नाम से जन्म लेती नई-नई बीमारियां, लोगों में घटती रोग प्रतिरोधक क्षमता। यह सब यूं ही नहीं है बल्कि यह सब परिणाम है रासायनिक खेती के माध्यम से अधिक फसल लेने के लालच में उस धरती माता को हमने जहरीले कीटनाशक और उर्वरक डाल-डाल कर बंजर बना दिया। जिस धरती मां ने हमें सब कुछ दिया। इन जहरीले उर्वरकों और कीटनाशकों से तैयार हुई फसलें भला अच्छा स्वास्थ्य कैसे प्रदान कर सकती हैं। भला जहरीले कीटनाशकों और उर्वरकों के माध्यम से उगाई गई फसल से अच्छे स्वास्थ्य की उम्मीद कैसे की जा सकती है। माना अंधेरा घना है लेकिन दीप जलाना कहां मना है। इन्हीं चंद लाइनों को चरितार्थ कर प्राकृतिक कृषि को जन-जन तक पहुंचाने के कार्य का जिम्मा पिछले लगभग एक दशक के करीब से राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने अपने कंधों पर लिया है और उसके सुखद परिणाम अब सामने आने लगे हैं। अब किसान उनके जागरूकता अभियानों के माध्यम से जागरूक हो रासायनिक खेती को त्याग कर प्राकृतिक खेती को अपनाने लगे हैं और प्राकृतिक खेती के माध्यम से वे अच्छा मुनाफा भी कमा रहे हैं, क्योंकि वर्तमान में प्राकृतिक खेती के उत्पादों की मांग लगातार बढ़ती जा रही है और लोग उनके लिए दोगुने और 3 गुने दाम देने के लिए भी तैयार हैं, क्योंकि अपने स्वास्थ्य के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहता। यह इतना आसान नहीं था, क्योंकि पहले पहल कोई भी प्राकृतिक खेती के परिणामों पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था, लेकिन जब प्राकृतिक खेती पर शोध हुए तो तब जाकर प्राकृतिक खेती की महत्ता को सबने न केवल समझा बल्कि इसे वर्तमान समय की जरूरत भी करार दिया। आज राज्यपाल आचार्य देवव्रत गुजरात राज्यपाल के पद पर होते हुए न केवल गुजरात में बल्कि पूरे देश भर में किसानों की

सभाएं कर लगातार किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए जागरूक कर रहे हैं। जब वे प्राकृतिक खेती सभाओं में लोगों को जागरूक करते हैं तो वे अध्यापक की भूमिका में नजर आते हैं और लोगों को उदाहरण सहित पूरी प्रक्रिया समझाते हैं।

राज्यपाल आचार्य देवव्रत के मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 180 एकड़ में पिछले कई वर्षों से प्राकृतिक खेती की जा रही है, जिसे देखने देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी कृषि वैज्ञानिक व किसान पहुंचते हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ही देशभर से आने वाले किसानों के लिए प्राकृतिक कृषि ट्रेनिंग की भी पूरी व्यवस्था की गई है। जिसके माध्यम से किसान ट्रेनिंग कर प्राकृतिक खेती को पहले कम क्षेत्र में कर उससे मुनाफा मिलने पर अधिक क्षेत्र में कर सकता है। डॉ० हरिओम (राष्ट्रीय कृषि अवॉर्डी) किसानों को प्रशिक्षित करने का कार्य कर रहे हैं। राज्यपाल आचार्य देवव्रत बताते हैं कि शुरुआत में उनके लिए भी विश्वास करना मुश्किल रहा, लेकिन जब इसके सुखद परिणाम देखे तो उन्होंने इसके लिए देशभर में जागरूकता की अलख जगाने का विचार किया और आज भारत सरकार और कई राज्यों की सरकारें किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य कर रही हैं। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने ऐलान किया है कि प्राकृतिक खेती करने के लिए अगले तीन साल तक 1 करोड़ किसानों की मदद की जाएगी। श्रीलंका, नेपाल व अन्य देशों से कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल कुरुक्षेत्र का प्राकृतिक खेती मॉडल देखकर और उससे प्रभावित होकर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की इच्छा जता चुके हैं। राज्यपाल आचार्य देवव्रत कहते हैं कि प्राकृतिक खेती मात्र कृषि नहीं बल्कि जीवन पद्धति है जो कि पुरातन समय में लोग लंबे समय से करते आ रहे थे। जंगल में पेड़

पौधों में जहरीले कीटनाशक या उर्वरक कोई नहीं छिड़कता, लेकिन बावजूद इसके वे पेड़ न केवल हरे भरे खड़े रहते हैं, बल्कि लंबे समय तक जीवित भी रहते हैं। राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा चलाई गई अभियानों से लाखों किसान प्रभावित होकर प्राकृतिक कृषि अपना चुके हैं। प्राकृतिक कृषि से जहां भूमि बंजर होने से बचेगी वहीं वायु और जल प्रदूषण भी नहीं होगा। प्राकृतिक खेती पूर्ण रूप से गौ आधारित कृषि है और इससे जहां गोरक्षा होगी वही गोसंवर्धन भी होगा और गोमाता के चमत्कारी गुणों से हर व्यक्ति गोमाता की महिमा को जान सकेगा कि आखिर गाय को हमारे धर्मग्रंथों और संस्कृति में आखिर माता का दर्जा क्यों दिया गया। प्राकृतिक खेती, कृषि की प्राचीन पद्धति है। यह भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग नहीं होता है, बल्कि प्रकृति में आसानी से उपलब्ध होने वाले प्राकृतिक तत्त्वों तथा जीवाणुओं के उपयोग से खेती की जाती है।

यह पद्धति पर्यावरण के अनुकूल है तथा फसलों की लागत कम करने में कारगर है। प्राकृतिक खेती में जीवामृत (जीव अमृत), घन जीवामृत एवं बीजामृत का उपयोग पौधों को पोषक तत्त्व प्रदान करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग फसलों पर घोल के छिड़काव अथवा सिंचाई के पानी के साथ में किया जाता है। प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, सोठास्त्र, दषा पड़नी, नीम पेस्ट, गोमूत्र का इस्तेमाल किया जाता है। निसंदेह प्राकृतिक खेती वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है, क्योंकि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है किंतु जब स्वस्थ तन ही नहीं रहेगा व्यक्ति कैसे आखिर समाज और देश को आगे बढ़ाने में सक्षम होगा। निश्चित रूप से राज्यपाल आचार्य देवव्रत की पहल पूरे देशभर में एक क्रांति के रूप में किसानों को जागरूक करने का कार्य कर रही है और भविष्य में इसके बेहद सुखद परिणाम होंगे, जो ने केवल किसानों की आय को बढ़ाने का कार्य करेंगे बल्कि इससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और किसान अपना भाग्य विधाता स्वयं बन सकेगा।

–प्रदीप दलाल की कलम से, स्वतंत्र पत्रकार एवं डायरेक्टर प्रेस एंड आईटी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 03 जून 2023 से 11 जून 2023 तक

स्थान आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, अपोजिट सिवि हॉस्पीटल, नजदीक पी.डब्ल्यू.डी. रेस्ट हाउस, पानीपत-132103 (मो० 7404040640) में आयोजित किया जा रहा है। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल ने गत 20 वर्षों से देश के विभिन्न प्रान्तों में सफलता पूर्वक कन्याओं को शारीरिक-आत्मिक व आत्मरक्षण प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर व स्वाभिमान से समाज में एक महत्त्वपूर्ण ढंग से जीवन जीना सिखाया। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम् भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है।

महर्षि दयानन्द की 200वीं जन्म शताब्दी पर शिविर के विशेष आकर्षण–शूटिंग, धनुर्विद्या, मार्शल आर्ट्स एवं आर्यजगत के जाने-माने विद्वानों द्वारा बौद्धिक उद्बोधन।

सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों व गरुकुलों में जहां वीरांगना दल की शाखायें लगती हैं, से निवेदन है कि वे अपनी वीरांगनाओं को इस शिविर में भेजें।

उद्घाटन : शनिवार 3 जून 2023 सायं 05:00 से 7:00 बजे तक
समापन : रविवार 11 जून 2023 प्रात: 10:00 से दोपहर 1:00 बजे तक

विशेष सूचना–(1) 3 जून दोपहर 12 बजे तक जरूर पहुँच जायें। (2) आयु कम से कम 14 वर्ष। (3) टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लायें। (4) शिविर का गणवेश 2 जोड़ी सफेद सलवार, कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद, पीटी सूज, सफेद मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएँ। (5) कोई भी विद्यार्थी मोबाइल फोन, कीमती वस्तु व अधिक पैसा साथ न लाएँ। (6) शिविर शुल्क 350/- प्रति शिविरार्थी होगा। पाठ्यपुस्तकें शिविर में दी जायेंगी। (7) सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 1 जून 2023 तक करा लें।

संपर्क संयोजक–

साध्वी डॉ० उत्तमायति, प्रधान संचालिका, मो० 9672286863
मृदुला चौहान, संचालिका, मो० 9810702762
आरती खुराना, मन्त्री, 9910234595
विमला मलिक, कोषाध्यक्ष, 7289915010
नीरज आर्य, सह-कोषाध्यक्ष
अभिलाषा आर्य, शिक्षिका
सचिन आर्य, शिक्षक
रणदीप जी, शिविराध्यक्ष, 8950119100
राजेन्द्र जी जागलान, शिविर संचालक, 9416334327

गज्जनसिंह गोविंदपुरा ने प्राकृतिक खेती अपनाकर खरबूजे से कमाया मोटा मुनाफा

- राज्यपाल आचार्य देवव्रत से प्रभावित हो प्राकृतिक खेती अपना बने औरों के लिए उदाहरण।
- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने किया प्राकृतिक खेती फार्म का निरीक्षण।
- बोले जहरीले कीटनाशक और दवाइयों के कारण लग रही अस्पतालों में लंबी लाइनें।

कैथल। पूर्व जिला सरपंच एसोसिएशन प्रधान गज्जनसिंह गोविंदपुरा ने लगभग 5 वर्ष पूर्व सीवन में आयोजित हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत के प्राकृतिक खेती अपनाने के संदेश से प्रेरित हो अपनी और अन्य किसानों की जिंदगी बदलने की ठानी और वहीं से उन्होंने जहरमुक्त प्राकृतिक खेती अपनाने के संकल्प के तहत खेती की और अब वह खरबूजे और अन्य फसलों के माध्यम से लाखों रुपए का मुनाफा कमा रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य, जिन्होंने राज्यपाल आचार्य देवव्रत के मार्गदर्शन और नेतृत्व में प्राकृतिक खेती अभियान को मिशन बनाया हुआ है, ने गज्जनसिंह गोविंदपुरा के खरबूजे के फार्म का निरीक्षण किया और इस दौरान वे बेहद उत्साहित दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि जहरमुक्त खेती के माध्यम से लोगों को अच्छी फसल और अच्छे फल व सब्जियां उपलब्ध कराना ही मुख्य उद्देश्य है और गज्जनसिंह गोविंदपुरा ने हजारों किसानों को जागरूक करने का अनूठा कार्य किया है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के माध्यम से ही किसान अपना भाग्य विधाता बन सकता है। उन्होंने कहा कि कई एकड़ में खरबूजे की फसल में एक भी फल उन्हें खराब नहीं दिखा और प्राकृतिक खेती से उगाए गए खरबूजों में मिश्री-सी मिठास है। सबसे बड़ी बात यह है कि जहरीली दवाइयों और कीटनाशकों का पूरा खर्च पूर्ण तरीके से बचाव हुआ है। सेठ राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि लोगों ने फसलों में जहर डाल-डालकर धरती को बंजर बनाने का कार्य किया है, इससे वायु-प्रदूषण और जल-प्रदूषण भी होता है। उन्होंने प्राकृतिक खेती के माध्यम से अच्छा मुनाफा होने पर गज्जनसिंह गोविंदपुरा को शुभकामनाएं दीं और कहा कि जब भी राज्यपाल आचार्य देवव्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आएंगे तो भी निश्चित रूप से गज्जनसिंह गोविंदपुरा के फार्म के खरबूजों की मिठास उन तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। गज्जनसिंह गोविंदपुरा ने कहा कि वर्तमान में लोग मोटा मुनाफा कमाने के चक्कर में फसलों में जहर का भारी-भरकम प्रयोग कर फसलों, सब्जियों और फलों को पूरी तरह जहरीला बना रहे हैं, जिससे नई-नई बीमारियां जन्म ले रही हैं और दूसरी तरफ भूमि, वायु और जल-प्रदूषण को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह सभी की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वे सभी प्राकृतिक खेती अपनाएं, क्योंकि प्राकृतिक खेती के माध्यम से उनका खर्च नाममात्र होगा और वह अच्छा मुनाफा कमा सकेंगे। उन्होंने कहा कि लोग पारिवारिक डॉक्टर रखते हैं तो उसके स्थान पर उन्हें पारिवारिक किसान रखना चाहिए और जो उन्हें प्राकृतिक खेती उत्पाद दे सके। उन्होंने कहा कि देश भर में राज्यपाल आचार्य देवव्रत प्राकृतिक खेती के माध्यम से जागरूकता की जो अलख जगा रहे हैं, वह बेहद सराहनीय है और भविष्य में इसके बेहद सकारात्मक परिणाम आयेंगे। इस अवसर पर राममेहर आर्य, सुनील ढुल, सुरेंद्र नरवाल, विशाल आर्य व अन्य उपस्थित रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कॉलेजियम व अंतरंग सदस्यों की प्रांत स्तरीय मीटिंग आयोजित

- महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयन्ती व आर्य वीर दल जागरूकता कैम्पों के माध्यम से किया जाएगा जागरूक-राधाकृष्ण आर्य।
- प्राकृतिक खेती व नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान रहेंगे मुख्य उद्देश्य-राजेंद्र विद्यालंकार।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा करेगी कार्यक्रमों की शृंखला का आयोजन।

पानीपत (30 अप्रैल) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रान्त स्तरीय मीटिंग का आयोजन स्थानीय आर्य बाल भारती विद्यालय के सभागार में किया गया जिसमें प्रदेश भर के अंतरंग सदस्य और कॉलेजियम सदस्यों ने भाग लिया। मीटिंग की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने की। प्रांतीय मीटिंग की शुरुआत गायत्री मंत्र के साथ हुई और समापन शांतिपाठ के साथ हुआ। इस अवसर पर राज्यपाल गुजरात के कार्यकारी अधिकारी डॉ० राजेंद्र विद्यालंकार ने आगामी 2 वर्षों तक हरयाणा में होने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि यह शुभ अवसर हमें प्राप्त हुआ है और हमें इसका लाभ उठाते हुए जन-जन तक महर्षि दयानंद सरस्वती के कार्यों और शिक्षाओं को पहुंचाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में नशाखोरी और अनेक सामाजिक बुराइयां समाज में विद्यमान हैं, उन्हें जड़ से मिटाने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाना और उन्हें जागरूक करना बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आगामी 2 वर्षों में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रदेश भर में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होगा जिसमें प्राकृतिक खेती, महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं का प्रचार एवं प्रसार समेत अन्य विषयों पर सभी कार्यक्रम केंद्रित होंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती पर सभा पूर्व में भी कई सफल कार्यक्रम करवा चुकी है और भविष्य में भी इसी विषय पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि समाज में छुआछूत अंधविश्वास अशिक्षा और अज्ञानता का नाश करने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपना पूरा जीवन समाज के नाम समर्पित कर दिया। हम सभी को आज उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचा कर उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है ताकि वे उन विचारों को अपने जीवन में आत्मसात् कर समाज से बुराइयों को जड़ से मिटा सकें। उन्होंने यह भी कहा कि पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण हमारी प्राकृतिक संपदा और संस्कृति का निरंतर ह्रास हो रहा है। इसे संरक्षण देने के लिए ही आर्यसमाज ने इन 2 वर्षों के दौरान वैदिक संस्कृति और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर प्रकृति संरक्षण करने का संकल्प लिया है और यह संकल्प सही मायने में तभी सिद्ध हो पाएगा, जब सरकार के साथ-साथ सभी प्रबुद्ध नागरिक वैदिक संस्कृति और वैदिक प्रकृति को बचाने के लिए संकल्पबद्ध होंगे। प्रदेशभर में इन कार्यक्रमों का आयोजन खंड स्तर और गांव स्तर तक किया जाएगा जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रचार मंडलियों के माध्यम से जन-जन को जागरूक किया जाएगा। इस अवसर पर स्वामी धर्मदेव, स्वामी ऋषिपाल, उमेद सिंह आर्य, आर्य रणदीप कादयान, राजेंद्र जागलान, रामपाल आर्य, विशाल आर्य, वीरेंद्र, सत्यवान आर्य, नवीन आर्य, रमेश आर्य, राहुल आर्य और सुमित्रा आर्य ने अपने विचार सांझा किए। इस अवसर पर सभी अंतरंग एवं कोलेजियम सदस्य उपस्थित रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ मासिक वैदिक सत्संग

- इस सत्संग में मुख्य अतिथि प्रोफेसर सुदेश छिक्कारा कुलपति भक्त फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर रहीं।
- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित मासिक वैदिक सत्संग 7 मई रविवार 2023 को दयानदमठ रोहतक में हुआ जिसमें मुख्यवक्ता पद्मश्री डॉ० सुकामा आर्या प्राचार्या, विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की रोहतक रहीं।

रोहतक (दिनांक 7.5.2023)। प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा पण्डित जगदेव सिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में होने वाला मासिक सत्संग हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज और बेटियों के लिए ही सारा जीवन लगाना लक्ष्य-प्रोफेसर सुदेश छिक्कारा ने अपने बचपन से लेकर हमेशा आर्यसमाज के प्रति उनके परिवार की और खासकर उनके पिताजी स्वर्गीय मास्टर खजानसिंह आर्य जी की निष्ठा और प्रेम के बारे में बताया और कहा के आज जो कुछ भी वो हैं या उनके बच्चे हैं सब आर्यसमाज की व आर्यसमाज के नियमों की वजह से हैं।

उन्होंने बताया कि आज भी बेटियों के लिए समस्या कम नहीं हैं और उन्होंने बहुत-सी ऐसी समस्याएँ कुलपति बनने के बाद महसूस की और इस दिशा में वो इसी लक्ष्य के साथ कार्य कर रहीं हैं कि जितना हो सके बेटियों को अच्छे संस्कार और अच्छी शिक्षा मिल सके। सभा में बैठे सभी आर्यसमाजियों ने उनकी तारीफ की और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

मन की शान्ति और चिंतन ही मनुष्य की जरूरत-डॉ० सुकामा आचार्या ने मन के चिंतन की उपयोगिता बताई और बताया कि चरक संहिता में भी सत्तर प्रतिशत मन पर आधारित है और तीस प्रतिशत शरीर पर व्याख्या है। उन्होंने बताया के विद्या तप और ज्ञान के महत्त्व के बारे में बताया।

आर्यसमाज के लिए घर से बाहर निकलना होगा-राधाकृष्ण आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सत्संग में आये आर्यजनों का स्वागत किया और सभा में आये मुख्य अतिथि प्रो० सुदेश छिक्कारा और डॉ० सुकामा आचार्या का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में वह पूरी निष्ठा से कार्य करने में लगे हुए हैं और एक चौकीदार की तरह इसके लिए कार्य करते रहेंगे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजश्री आर्या भी शामिल रहीं। सभी ने मिलकर उनका एवं सभी मुख्य अतिथि और मुख्यवक्ता और सभी आये आर्यों का स्वागत किया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमंत्री डॉ० अनुराग खटकड़, सभा कार्यालयाधीक्षक श्री सत्यवान आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रमेश आर्य, श्री सुभाष आर्य, डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार, डॉ० देवीसिंह मलिक, श्रीमती कमला, डॉ० सरिता, बहन दया आर्या आदि शामिल रहे तथा आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य अपने सुंदर भजन प्रस्तुत किया।

मंच का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रमेश आर्य ने की तथा अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री डॉ० अनुराग खटकड़ ने मंच पर उपस्थित सभी विद्वान्, साधु-सन्त एवं सभी सत्संग-प्रेमियों का सत्संग में पधारने पर हार्दिक धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद ऋषिलंगर का आयोजन भी किया गया। **-सत्यवान आर्य, कार्यालयाधीक्षक**

वर्तमान युग में त्रैतवाद... पृष्ठ 6 का शेष...

समीक्षा–हमने देखा भारतीय चिन्तकों में जहां एकत्ववादी थे, वहां द्वित्ववादी भी थे जिनका कहना है कि सृष्टि उत्पत्ति की समस्या सिर्फ एक मूल सत्ता को मानने से हल नहीं होती। चाहे जड़ को मूल सत्ता माने चाहे चेतन को जड़ से चेतन उत्पन्न नहीं हो सकता, न चेतन से जड़ उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि यह दोनों तत्त्व एक-दूसरे से भिन्न हैं। इसलिए इन सब नाना रूपी जड़ रूपों को एक में समाविष्ट कर जड़ प्रकृति का नाम दे दिया गया। वैसे ही चेतन में अल्पत चेतन और सर्वज्ञ चेतन ये मूल तत्त्व भी हो यह तीनों शब्द पिण्ड में आत्मा तथा ब्रह्माण्ड में परमात्मा पर एक समान घटित हो जाते हैं। विचार किया जाता है सांख्य, उपनिषिद् आदि में ईश्वर, जीव, प्रकृति इन तीनों मूल सत्ताओं को स्वीकार करते हैं।

नोट-इस लेख का सारांश वेदों में वैज्ञानिक रहस्य लेखक डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार से लिया गया है।

सम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून 9411512019

शोक-समाचार

बड़े दुःखी हृदय के साथ शोक-सन्देश दे रहा हूँ कि श्रीमती शान्ति देवी जी (आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर-7, चंडीगढ़) अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके दिनांक 27 अप्रैल 2023 (गुरुवार) को दिवंगत हो गई हैं। माताजी का जीवन निर्भीक एवं कर्त्तव्यनिष्ठा से भरा हुआ था। आपने हमेशा महिलाओं को पाखण्ड व अन्धविश्वास से दूर रहने का संदेश दिया, परन्तु ईश्वरीय व्यवस्था को हमें स्वीकार ही करना पड़ता है। श्रीमती शान्तिदेवी जी आर्यसमाज के प्रति पूर्ण समर्पित महिला थीं। उन्होंने गृहस्थ जीवन में रहते हुए अतिथि सत्कार भी किया करती थीं।

मैं राधाकृष्ण आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक माता जी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता हूँ तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ एवं शोकाकुल पटियाल परिवार को सान्त्वना देता हूँ।

–सेठ राधाकृष्ण आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पूर्वजों की याद... पृष्ठ 4 का शेष...

रहना चाहिए।''–अर्थात् समाज के अनुशासन का सदा पालन करना चाहिए।

भावार्थ-जैसे महापुरुष अपना कर्त्तव्य मानकर समाजसेवा को साधना रूप में करते हैं, वैसे ही तुम भी सामाजिक भावना से परस्पर मिलकर चलो अर्थात् जीवन जियो, आपस में इसी भावना से बोलो और इसके लिए तुम सब अपने मनों को समझाओ, तैयार करो। कुछ पूर्वज केवल परिवार तक जुटे रहते हैं और कुछ परिवार के साथ ही साथ गांव की भी सेवा करते हैं। कुछ पूर्वज परिवार और स्थानीय संस्था की संभाल करते हैं और कुछ इलाके की भी साथ-साथ सेवा निभाते हैं। कुछ इससे भी आगे बढ़कर प्रान्त, देश, विदेश की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं। इसी प्रकार वह-वह पूर्वज अपनी सेवा, साधना के अनुसार याद किये जाते हैं।

संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

शोक-समाचार

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री सतपाल देशवाल (चीफ अकाउंटेंट, गुरुकुल कुरुक्षेत्र) अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके दिनांक 02.04.2023 को दिवंगत हो गये। उनकी शोकसभा तथा रस्म-पगड़ी दिनांक 14.04.2023 शुक्रवार को उनके पैतृक गाँव शेरगढ़ (शाहबाद-साहा रोड नजदीक Cygnus High World Sen. Sec. School, NH-444 A) जिला अम्बाला में किया गया। श्री सतपाल देशवाल जी बहुत ही ईमानदार, मिलनसार तथा मेहनती थे। उन्होंने गुरुकुल कुरुक्षेत्र में रहते हुए चीफ अकाउंटेंट के पद पर कार्य किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक उनके आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि व्यथित परिवार को दुःख सहने की क्षमता प्रदान करे।

–सत्यवान आर्य, कार्यालयाधीक्षक

संस्कृति नहीं विकृति है... पृष्ठ 7 का शेष....

परस्पर स्त्री व पुरुष के मध्य ही हैं। पुरुष पुरुष अथवा स्त्री स्त्री के मध्य नहीं है। समान लिंग वाला विवाह तो कोई अर्थ ही नहीं रखता न उससे सन्तानोत्पत्ति होती, न उसका कोई औचित्य ही है। दूसरे वह विवाह ही नहीं कहा जा सकता। अतः इस विषय पर विचार करना ही अर्थहीन है।

एक और रोग वह भी पाश्चात्य देशों की देन है चल रहा है। लिव इन रिलेशनशिप जो कि पाशविक, अनैतिक, असामाजिक, अव्यावहारिक तथा अमानवीय है। अभी इसी कारण से अनेक घटनाएँ हो चुकी हैं। कामुकतावश यह स्त्री-पुरुष का एक-साथ का रहन-सहन होता है जिसमें दूसरे यदि एक साथ स्त्री पुरुष से पूर्व रहते हैं, जिनका न तो भाई बहन का सम्बन्ध है न माता, पुत्र, पिता-पुत्री, बुआ भतीजा जैसा भी कोई सम्बन्ध है और वह नौकरी पेशे में भी एक साथ रहते हैं, तो कामुकता उत्पन्न होने की पूरी सम्भावना होगी और वहाँ शारीरिक सम्बन्ध हो जघन्य हत्या जैसी घटनाओं का परिणाम होता है।

ऐसे असामाजिक कृत्यों को आज भारतीय समाज का अंग बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। यह पाश्चात्य संस्कृति से सम्बन्धित है। पाश्चात्य संस्कृति में जो चल रहा था आज उसे भारतीय संस्कृति के साथ जोड़ने का प्रयत्न हो रहा है। भारत ब्रह्मचर्य प्रधान देश है। भोगवादी संस्कृति से अलग है। यहाँ की संस्कृति/पाश्चात्य संस्कृति में एक विवाह विच्छेद कर नया विवाह करना भी उनका अपना व्यवहार संस्कार है। हमारे यहाँ एक पत्नी एक पति और सात जन्म तक एक साथ रहने के वचन बोले जाते हैं। एक पति एक पत्नी जीवन भर साथ निभाते हैं। पत्नी-पति एक दूसरे के प्रति सदा समर्पित रहते हैं।

समलैंगिक विवाह कोई संस्कार भी नहीं है। संस्कारों से जीवन में गुणों की वृद्धि होती रहती है। मानव के जीवन को संस्कार उन्नतिशील कर्मशील बनाते हैं। समलैंगिक का विवाह किसी अच्छाई मानवता सामाजिकता सद्गुणों व वैज्ञानिकता से भी परे है। अप्राकृतिक सम्बन्ध है। इसका प्रतिकार ही होना चाहिए। यह एक विकृति है।

क्या महाभारत में मन्त्र... पृष्ठ 9 का शेष....

स्पर्धमानस्तु पार्थेन सूतपुत्रोऽत्यमर्षणः।
दुर्योधनं समाश्रित्य सोऽवमन्यत पाण्डवान्॥

(131-12)

यदि यह सत्य है तो जब कर्ण ने रंगभूमि में अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शन के समय उपस्थित होकर अर्जुन को ललकारा था, तो उसे किसी ने पहचाना क्यों नहीं? वहाँ सभी यह जानने के लिए उत्कण्ठित हो गये थे कि यह कौन आया है (135-7)। यदि कर्ण भी द्रोण-शिष्य था, तो उसने अर्जुन से यह क्यों कहा-

किं क्षेपैर्दुर्बलायासैः शरैः कथय भारत।
गुरोः समक्षं यावत् ते हराम्यद्य शिरः शनैः॥

(135-20)

"भारत! आक्षेप करना तो दुर्बलों का प्रयास है। इससे क्या लाभ है? साहस हो तो बाणों से बातचीत करो। मैं आज तुम्हारे गुरु के सामने ही बाणों द्वारा तुम्हारा सिर धड़ से अलग किए देता हूँ।"

पाण्डवों के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देखते ही दुर्योधन ने कर्ण से मित्रता गांठ ली, पर उसे उसी समय अंग देश का राजा बना दिया हो, यह संभव नहीं लगता, क्योंकि उस सतय तो दुर्योधन भी युधिष्ठिर आदि की तरह विद्यार्थी ही था, राजा नहीं। वह तो युवराज भी नहीं था। गुरु-दक्षिणा देने (द्रुपद को बन्दी बनाने) के बाद युधिष्ठिर को युवराज बनाया गया (आदि० 138-1)। फिर दुर्योधन किस अधिकार से कर्ण को अंग देश का राजा बनाता? शान्तिपर्व के अनुसार तो कर्ण जरासंध को परास्त कर अंगराज बना था-

स विकारं शरीरस्य दृष्ट्वा नृपतिरात्मनः।
प्रीतोऽस्मीत्यब्रवीत् कर्णं वैरमुत्सृज्य दूरतः॥
प्रीत्या ददौ स कर्णाय मालिनीं नगरीमथ।
अङ्गेषु नरशार्दूल स राजाऽऽसीत् सपत्नजित्॥

"युधिष्ठिर! राजा जरासंध ने अपने शरीर के उस विकार (शरीर की सन्धि को चीरना) को देखकर वैरभाव को दूर हटा दिया और कर्ण से कहा-'मैं तुम पर प्रसन्न हूँ।' साथ ही उसने प्रसन्नता पूर्वक कर्ण को अंग देश की मालिनी नगरी दे दी। नरश्रेष्ठ! शत्रुविजयी कर्ण तभी से अंग देश का राजा हो गया।" (शान्ति० 5-5,6)

क्रमशः अगले अंक में....

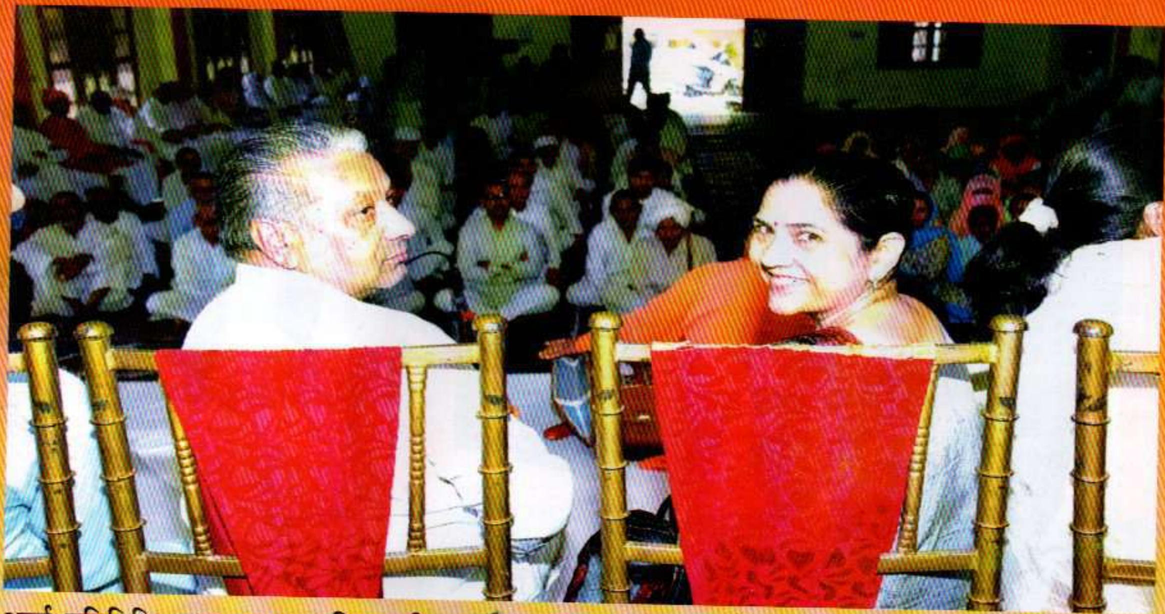

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में आयोजित मासिक वैदिक सत्संग दिनांक 07 मई 2023 को मंच पर उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजश्री मंच की शोभा बढ़ाते हुए एवं साथ में अन्य सदस्यगण भी बैठे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में आयोजित मासिक वैदिक सत्संग दिनांक 07 मई 2023 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक पण्डित रामनिवास आर्य एवं उनकी भजन मण्डली भंजन प्रस्तुत करते हुए तथा साथ में सामने बैठे श्रोतागण भजनों का आनन्द लेते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य व प्रधान आर्य रणदीप कादियान, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री राजेन्द्र जागलान, उप-प्राचार्य श्री राजकुमार शास्त्री व श्री महताबसिंह अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत के भवन नवीनीकरण व मुख्य द्वार का उद्‌घाटन किया।

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा